पद-पाठ के नियम

संहिता-पाठ से पदपाठ बनाने का मौलिक आधार पद-सञ्ज्ञान तथा पदों का पृथक्करण है। इसके लिए क्रमशः सन्धि-विच्छेद, अवगृह-करण, इतिकरण एवं अनुनासिकी-करण के साथ-साथ स्वर-परिवर्तन आदि विविध सोपानों की आवश्यकता होती है जिन्हें संक्षेप में निम्नवत् निरूपित किया जा सकता है—

(१) **सन्धिविच्छेद**—(i) संहिता पाठ की स्वरसन्धियों को पहले अलग-अलग कर लेना चाहिए जैसे इन्द्रेहि = इन्द्र। आ। इहि। एमसि = आ। ईमसि।

(ii) स्वरसन्धियों के साथ-साथ व्यञ्जनसन्धियों को भी अलग कर लेना चाहिए।

जैसे—विपाट्च्छुतुद्री = विपाट् + शुतुद्री।

(iii) जिस विसर्ग को 'ओ' लोप, 'र्' या 'स्' या 'ष्' हुआ हो उस शब्द को मूल विसर्गयुक्त अवस्था में कर देना चाहिए।

जैसे—देवो देवेभिः = देवः। देवेभिः। देवास आसते = देवासः आसते।

(iv) संहिता पाठ के सन्धि-विकारजन्य 'ष्' को 'स्' और 'ण्' को न् कर देना चाहिए।

जैसे—ऊती ष वृहतः = ऊती। सः। बृहतः।

(v) कहीं-कहीं संहिता पाठ में कुछ वर्णों का लोप हो जाता है विशेषकर 'ईम्' के 'म्' को और द्विचनान्त शब्दों के 'आ' का लोप हो जाता है। पदपाठ में इन्हें लगा लेना चाहिए।

जैसे—यम् ई गर्भम् = यम्। ईम्। गर्भम्। धृतव्रत मित्रावरुण = धृतव्रता। मित्रावरुणा।

(vi) अनुस्वारान्त को मान्त करके लिखे, यथा क्रतुं परः = क्रतुम्। परः।

(vii) प्रत्येक प्रकार के सन्धिजन्य विकारों से रहित सर्वथा मौलिक पद का ही प्रयोग करें। जैसे—प्लुति के कारण जहाँ स्वर दीर्घ हुए हों उन्हें ह्रस्व कर दें। यथा मक्षूमक्षू कृणुहि = मक्षुऽमक्षु कृणुहि। इसी प्रकार विवृति के व्यवधान को दूर करने के लिए लगाये गये अनुस्वार को भी हटा दिया जाता है—शशदानाँ एषि = शशदान। एषि।

(viii) पदपाठ करते समय कहीं-कहीं शब्दों के क्रम को भी बदलना पड़ता है। जैसे—शुनश्चिच्छेपम् = शुनःशेपम् चित्।

Scanned with CamScanner

(२) **अवग्रह का प्रयोग**—पदपाठ में अनेक स्थलों पर पद को एक साथ रखकर भी उन्हें पृथक् प्रदर्शित करने के लिए अवगृह का प्रयोग किया जाता है। अवगृह-प्रयोग के कुछ नियम इस प्रकार है—

(i) शब्दों के साथ लगी कुछ विभक्तियों को अलग करने के लिए मूल शब्द एवं विभक्ति के बीच अवग्रह 'ऽ' चिह्न लगा देते हैं। इसके लिए प्रायः 'भ्' से शुरू होने वाले विभक्ति चिह्न (भ्याम्, भिस्, भ्यस्) को शब्द से अलग कर देते हैं यदि उस शब्द के अन्त में ह्रस्व स्वर हो और मूलशब्द में कोई मौलिक परिवर्तन न हुआ हो। यथा—

मरुद्भिः = मरुत्ऽभिः, हरिभ्याम् = हरिऽभ्याम्। चतुर्भिः = चतुःऽभि। किन्तु द्वाभ्याम्, अष्टाभिः, देवेभ्यः में अवग्रह से अलग नहीं करते हैं। 'अस्मभ्यम्' और तुभ्यम् में भी विभक्ति चिह्न अलग नहीं किये जाते हैं।

(ii) जब सप्तमी बहुवचन का विभक्ति चिह्न 'सु' को षु नहीं हुआ हो और न उसके पहले दीर्घ स्वर हो तो शब्द से अलग कर देते हैं।

(iii) उपसर्ग जब शब्द से मिले हों तो उन्हें अलग कर देते हैं जैसे—प्रचेतः = प्रऽचेतः। अभिचक्षे = अभिऽचक्षे। उपस्थे = उपऽस्थे।

(iv) शब्दों के बाद लगने वाले प्रत्ययों को अलग कर देते हैं। वृत्रहा = वृत्रऽहा। देवत्वम् = देवऽत्वम्। किसी पद में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों होने पर केवल प्रत्यय से पूर्व अवग्रह लगाते हैं।

(v) नकारात्मक अर्थ वाले 'अन्' और 'अ' उपसर्ग अलग नहीं किये जाते हैं जैसे अजरः।

(vi) यदि एक शब्द में एक से अधिक उपसर्ग लगे हों तो पहले वाले उपसर्ग को ही अवग्रह द्वारा पृथक् करते हैं। सुप्रवचनम् = सुऽप्रवचनम्। इसके अपवाद भी मिलते हैं।

(vii) किसी शब्द के साथ जब 'इव' लगा हो तो 'इव' को ही अवग्रह लगाकर अलग करते हैं यदि ऐसे शब्द के पहले उपसर्ग भी लगा हो तो उसे अवग्रह द्वारा अलग नहीं करते हैं जैसे—प्रगर्धिनीइव = प्रगर्धिनीऽइव।

(viii) समास से बने पदों को अवग्रह द्वारा अलग-अलग कर दिया जाता है और समास होने से वर्णों में जो परिवर्तन हुए हैं, उन्हें मौलिक रूप में कर देते हैं जैसे—घोरवर्पसः = घोरऽवर्पसः, पुरोहितम् = पुरःऽहितम्।

(ix) जिस समास का पहला पद 'द्वा' हो उस 'द्वा' को अलग नहीं करते हैं 'द्वादश'। 'वनस्पति' समास को अलग नहीं करते हैं।

(x) पद की द्विरावृत्ति में अवगृह का प्रयोग होता है जैसे द्यविद्यवि = द्यविऽद्यवि, दिवेदिवे = दिवेऽदिवे।

(xi) सामासिक पद में दो से अधिक पद होने पर अन्तिम पद को अवगृह से प्रथक् करना चाहिए।

(xii) जिस पद की अनेक प्रकार से व्युत्पत्ति हो सकती हो उसमें अवगृह का प्रयोग नहीं करते हैं जैसे—रिशादशः।

Scanned with CamScanner

(३) **इतिकरण**—प्रगृह्य स्वरों से समाप्त होने वाले शब्दों के आगे पदपाठ में आद्युदात्त 'इति' का प्रयोग किया जाता है। इसे विस्तृत रूप में इस प्रकार समझ सकते हैं—

(i) 'ई' जब, द्वितीया का द्विवचनान्त हो या सप्तमी में हो तो प्रगृह्य होता है। इन द्विवचनान्त शब्दों या सप्तमी के रूप के बाद 'इति' लगता है जैसे—द्यावापृथिवी = द्यावापृथिवी इति। रोदसी = रोदसी इति।

(ii) 'अमी' के ई को भी प्रगृह्य होता है। अमी = अमी इति।

(iii) द्विवचनान्त या सप्तमी में जब शब्द के अन्त में ऊ हो तो उसके साथ भी इति लगता है। इन्द्रवायू इति। धृष्णू इति। चमूइति।

(iv) 'उ' के स्थान पर पद पाठ में 'ऊँ इति' हो जाता है।

(v) जब द्विवचनान्त शब्द के अन्त में 'ए' आये तो उसे भी प्रगृह्य होता है और पदपाठ में उसके साथ भी 'इति' लगता है। अबुध्यमाने = अबुध्यमाने इति।

(vi) जब 'ए' द्विवचनान्त क्रियारूप के अन्त में आवे तो उसके बाद भी 'इति' होता है। जैसे—आशाते = आशते इति, नमेते = नमेते इति।

(vii) अस्मे, युष्मे, त्वे के बाद भी पदपाठ में 'इति' होता है।

(viii) जब सम्बोधन के अन्त में 'ओ' आवे तो उस शब्द के बाद इति होता है जैसे—विष्णो = विष्णो इति।

(ix) जब 'ओ' स्वयं स्वतन्त्र शब्द हो तो उसके बाद इति होता है जैसे ओ इति।

(x) अथो, उतो, यहो, तत्वो, भो के 'ओ' के बाद भी पदपाठ में 'इति' लगता है।

(xi) होतर् और नेष्टर् आदि शब्दों में विसर्ग होने के पहले मूल रूप में र रहा हो तो पदपाठ में उसके बाद इति लगता है, जैसे होतरिति।

(४) **इतिकरण के साथ पद का पुनरावर्तन**—जिस पद में अवगृह एवं इति दोनों का प्रयोग करना होता है उनमें पहले पद को यथावत् रखकर इति लगाते हैं तथा बाद में पद का अवगृह-सहित पुनरावर्तन करते हैं। कई अन्य स्थितियों में भी पद का पुनरावर्तन होता है जिन्हें निम्नवत् समझा जा सकता है—

(i) समासयुक्त पद के अन्त में जब 'ई' या 'ऊ' आवे अर्थात् सामासिक पद प्रगृह्य सञ्ज्ञक हो तो उस पद के बाद इति का प्रयोग करके पद का पुनरावर्तन करते हैं जैसे—द्रवत्पाणी = द्रवत्पाणी इति द्रवत्ऽपाणी, वाजिनीवसू = वाजिनीवसू इति वाजिनीऽवसू।

(ii) ईकारान्त एवं ऊकारान्त शब्द के बाद 'इव' आवे तो उस शब्द में इव के साथ इति लगता है और दुहराया जाता है जैसे दम्पतीइव = दम्पती इव इति दमत्पतीऽइव। संरराणे = संरराणे इति सम्ऽरराणे।

(iii) स्युः और 'अकः' आदि शब्दों के बाद इति लगाकर दुहरा देते हैं जैसे अकः = अकरित्यकः।

Scanned with CamScanner

(५) **स्वर-परिवर्तन**—संहितापाठ से पदपाठ करते समय होने वाली स्वर-परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने हेतु सर्वप्रथम स्वरों की पारस्परिक सन्धि की स्थिति में बनने वाले सन्धिज स्वरों का ज्ञान आवश्यक है जिसे एक दृष्टि में निम्नवत् देखा जा सकता है—

उदात्त + उदात्त = उदात्त

अनुदात्त + उदात्त = उदात्त

स्वरित + उदात्त = उदात्त

स्वरित + अनुदात्त = स्वरित

उदात्त + अनुदात्त = उदात्त (दो ह्रस्व इ कारों की सन्धि के अतिरिक्त प्रश्लिष्ट सन्धि में) उदात्त + अनुदात्त = स्वरित (प्रश्लिष्ट सन्धि में केवल इ + इ अर्थात् दो ह्रस्व इकारों की सन्धि होने पर तथा क्षैप्र एवं अभिनिहित सन्धि में सर्वत्र)।

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि—

१. अनुदात्त की अनुदात्त या स्वरित के साथ सन्धि होने पर अनुदात्त होता है।

२. स्वरित और अनुदात्त तथा (कुछ स्थितियों को छोड़कर) उदात्त और अनुदात्त की सन्धि स्वरित होती है।

३. उदात्त और स्वरित की सन्धि नहीं होती है।

४. शेष स्थितियों में प्रायः उदात्त होता है।

स्वर-परिवर्तन के सामान्य नियम

संहिता-पाठ से पदपाठ करते समय संहिता-पाठ-गत अनुदात्त स्वर की स्थिति का विशेष ध्यान रखना होता है क्योंकि उदात्त स्वर तो प्रत्येक स्थिति में यथावत् रहता है। प्रायः सर्वाधिक परिवर्तन अनुदात्त से स्वरित या प्रचय तथा स्वरित से अनुदात्त के रूप में ही होते हैं। 'उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः' (अष्टा. ८.४.६६) के अनुसार उदात्त के बाद आने वाला अनुदात्त स्वरित हो जाता है यदि उसके बाद कोई उदात्त या स्वरित न हो। इसी प्रकार स्वरित के बाद के एक या अनेक अनुदात्त (उदात्त से ठीक पहले को छोड़कर) प्रचय हो जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि पूर्व-पर स्वरों के आधार पर अनुदात्त ही कहीं स्वरित तथा कहीं प्रचय होता है और स्थिति-विशेष से परिवर्तित यह स्वरित या प्रचय उस स्थिति के न मिलने पर पुनः अनुदात्त हो जाता है। इस प्रकार पदपाठ करते समय प्रायः सन्धिज स्वरों की पहचान के साथ अनुदात्त-स्वरित या प्रचय के पूर्व-परस्थिति-जन्य पारस्परिक परिवर्तन को ही एक पहेली की तरह ध्यान में रखना होता है। वैसे तो यह स्वर-परिवर्तन का रहस्य उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः पर ही आश्रित है फिर भी निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर स्वर-परिवर्तन की सामान्य स्थितियों को अलग-अलग इस प्रकार रूपायित किया जा सकता है—

१. संहिता में पूर्व पद के अन्तिम उदात्त के कारण उत्तर पद के आदि के अनुदात्त को स्वरित हुआ हो तो उसे अनुदात्त कर दें—जैसे—तिरः समुद्रम् = तिरः। समुद्रम्, आ गहि = आ गहि॥ अभि त्वा = अभि त्वा।

२. इसी स्थिति में स्वरित से परे प्रचय अनुदात्त करें—

प्र देव वरुण व्रतम् = प्रदेव। वरुण। व्रतम्। सं भरन्ति = सम्। भरन्ति।

Scanned with CamScanner

३. संहिता पाठ में पूर्व पद के अन्तिम स्वरित के कारण उत्तर पद के आदि या सभी एक श्रुतियों को पदपाठ में अनुदात्त कर दें। जैसे—

युगानि वितन्वते = युगानि। वितन्वते, सधस्थं विचक्रमाणः = सधस्थम्। विचक्रमाणः।

४. संहिता पाठ में उत्तर पद के आदि उदात्त या जात्यस्वरित होने के कारण पूर्व पद का अन्तिम अनुदात्त स्वर यदि स्वरित न हुआ हो तो पदपाठ में उसे स्वरित कर दें। जैसे— यस्य त्री = यस्य। त्री, मध्व उत्सः = मध्वः। उत्सः।

५. संहिता पाठ में यदि पूर्व पद में स्वरित से उत्तरवर्ती अनुदात्त को उत्तर पद के आद्युदात्त या जात्यस्वरित होने पर प्रचय न हुआ हो तो पदपाठ में उसे प्रचय कर दें। जैसे— भुवनानि विश्वा = भुवनानि। विश्वा, युध्यमाना अवसे = युध्यमानाः। अवसे।

६. जिस पद में अवगृह एवं इति दोनों का प्रयोग करना हो और उसका अन्तिम वर्ण यदि उदात्त हो तो इति के स्वरित से परे किसी अनुदात्त को प्रचय नहीं करते हैं—

जैसे—संरराणे = संरराणे इति सम्ररराणे। अथवा समाराणे = समाराणे इति सम्ऽआराणे।

Scanned with CamScanner